16

दानवों से लड़ते समय याद रखने योग्य सात सच्चाइयां

(1 शमूएल 17)

आपको याद है कि आपने दाऊद और दानव (गोलियत) की कहानी पहली बार कब सुनी थी और इस कहानी से आप कितने रोमांचित हुए थे ? शायद आपने यह कहानी इतनी बार सुन ली है कि अब आप इससे प्रभावित नहीं होते। इस पाठ के महत्व को समझने के लिए, यह मानकर चलें कि आप इस कहानी को पहली बार सुन रहे हैं। ज़्या आप ऐसा कर सकते हैं ? बहुत अच्छे। तो आइए हम बाइबल के सबसे अधिक रोमांचक दुस्साहसी कार्यों में से एक का अध्ययन करते हैं।[1]

1 शमूएल 17 अध्याय के आरज़्भ में, इस्राएली लोग युद्ध में लगे हुए थे: ''अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिए अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया'' (आयत 1)। पलिश्ती लोग भूमध्य सागर के टापुओं से पलिश्तीन में आए थे और उन्होंने तट पर नगर बसा लिए थे। वे इस्राएलियों की पसली का कांटा थे। ज़्योंकि वे इस्राएलियों से लड़ने के लिए आए थे।[2]

1 से 3 आयतों में इस पूरे दृश्य को दिखाया गया है: राजा शाऊल और उसकी सेना डरे हुए एक पहाड़ पर थे जबकि दूसरी ओर पलिश्ती जमा थे। इसके बीच में एला नामक तराई पड़ती है।[3] रोज़ सुबह, दोनों सेनाएं हथियार धारण कर युद्ध के लिए ललकारती थीं (17:20, 21)। दोनों सेनाएं एक दूसरे को ललकारती थीं, परन्तु युद्ध करने की पहल कोई नहीं करता था। अंत में, पलिश्तियों में से एक दानव आकार बहुत बड़े डील-डौल वाला आदमी निकला: ''तब पलिश्तियों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसके डील की लज़्बाई छह हाथ एक बित्ता थी'' (17:4)। वह लगभग साढ़े नौ फुट लज़्बा होगा![4] यह मानकर चलें कि गोलियत के शरीर का अनुपात अधिकतर लोगों की तरह था और उसका भार 600 से 700 पौंड तक होगा![5] वह मोटा नहीं, बल्कि 600 से अधिक पौंड की मांस पेशियों वाला आदमी था। लड़कपन से ही वह सिपाही था (17:33)। वह युद्ध में निपुण सैनिक था।

उसने टोप सहित पूरे शरीर पर कवच पहना होता था।[6] उसका ''पज़र का झिलम''[7] 125 से 150 पौंड का था;[8] उसके हाथ में एक भाला होता था, जिसके साथ उसकी पीठ पर

एक अतिरिक्त बरछी बंधी होती थी। उसके भाले की छड़ जुलाहे की डोंगी जैसी थी और उसका सिरा पन्द्रह से बीस पौंड भारी होता था![7] (उसे इसे किसी की ओर फैंकने की जरूरत नहीं होती होगी क्योंकि इसे वह आसानी से अपने विरोधी के सिर पर रख सकता था!) उसका कवच इतना भारी था कि एक सिपाही उसे उठाकर उसके आगे-आगे चलता था।

गोलियत एला घाटी में घूमता हुआ चुनौती देता था, ''किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें!'' उसका ऐलान था कि ''यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी'' (17:9)। इसे ''एक आदमी से युद्ध करने की चुनौती'' और सैनिक झगड़ों को निपटाने के लिए एक वाजिब ढंग माना गया। विचार बुरा नहीं है। अगली बार जब लगे कि दो देशों के बीच युद्ध होने वाला है, तो दोनों देशों के एक-एक नेता को लड़ाई के लिए भेजकर हम सब युद्ध से बच सकते हैं।

आयत 11 कहती है, ''उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे सब डर गए।'' आयत 16 टिप्पणी करती है कि ''वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवेरे और सांझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था।'' गोलियत चालीस दिन तक दिन में दो बार एला घाटी में टहलता और यह चुनौती देता रहा जिसका अर्थ है कि उसने कुल अस्सी बार चुनौती दी होगी। वह इक्यासिवीं बार यह चुनौती देने वाला था।

साढ़े नौ फुट लम्बे दैत्य का सामना करना बहुत ही भयभीत करने वाला होगा ... परन्तु हम सबको जीवन में-वे चीज़ें जिनका हमें अपने जीवनों में अस्पष्ट सी छाया के रूप में, सामना करना पड़ता है, दानव या दैत्य ही हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें उन समस्याओं पर विजय पानी ही होगी। हो सकता है कि यह कोई कानूनी लड़ाई हो, नियोक्ता के साथ झगड़ा, बुरी आदत से संघर्ष, प्रलोभन पर काबू पाना और तनावग्रस्त सम्बन्ध में काम करना हो। लोग या किसी प्रकार का कोई दबाव भी शामिल हो सकता है; जिसका परिणाम चिंता और भय हो। यदि आपको अभी किसी दानव का सामना नहीं करना पड़ा है, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि कभी न कभी आपको इसका सामना अवश्य करना पड़ेगा!

जो चीज़ मुझे अपने जीवन में दैत्य की तरह लगती है, हो सकता है कि आपको न लगती हो, परन्तु है वह दानव ही। जो आपके लिए दानव है, हो सकता है वह मेरे लिए न हो, परन्तु है वह हकीकत में दानव ही। हम में से हर किसी को अपने विशेष प्रलोभनों के साथ संघर्ष करना पड़ता है, ये वे दानव हैं जिनका सामना हमें हर रोज़ करना पड़ता है, वे सचमुच में हैं! कभी किसी दूसरे के दानवों को कम करके न आंकें।

दानवों का सामना करते हुए, हम सबके सामने आने वाली और हमें घेरने वाली चुनौतियां और समस्याएं हमारे घुटनों को कमज़ोर कर देती हैं। प्रश्न यह है कि हम जीवन के गोलियतों को कैसे *पराजित* कर सकते हैं? 1 शमूएल 17 में हमें दानवों से लड़ते समय सात बातों को याद रखने की बात पता चलती है, ये सात सत्य ऐसे हैं जो हमें विजयी होने

में सहायता कर सकते हैं।

I. दानव तब आते हैं जब आपको उनकी उज़्मीद नहीं होती (17:12-15, 17-23)

दाऊद बैतलहम में अपने घर में था जबकि उसके तीन बड़े भाई इस्राएल की सेना में थे। वे पलिश्तियों से युद्ध लड़ने के लिए शाऊल के साथ गए हुए थे। सबसे बड़े बेटे को युद्ध में भेजना और छोटे को घर में रखना उस समय की एक परज़्परा थी। बेशक दाऊद परिवार में लड़का ही था परन्तु वह दस बच्चों में से सबसे छोटा था। वह भी टीन एज में ही होगा अर्थात तेरह से उन्नीस वर्ष का, और बीस का नहीं हुआ होगा।[10] उसका अधिकतर समय खेतों में चरवाही का काम करते ही बीतता था। कभी-कभी वह राजा के लिए वीणा बजाने के लिए शाऊल के महल में जाता था (17:15; तु. 1 शमूएल 16:23), परन्तु उसकी दिनचर्या भेड़ों की देखभाल करना ही थी।

एक दिन यिशै दाऊद से कहता है, ''तेरे भाइयों को गए चालीस दिन हो गए हैं, और पता नहीं उनका ज़्या हुआ। तू जाकर उनका हाल-चाल देख आ। यह सामान उनके पास ले जा, और आकर उनके बारे में मुझे बता।'' बैतलहम वहां से केवल दस मील दूर था, परन्तु परिवार को एक महीने से अधिक समय से उन तीन भाइयों का कोई समाचार नहीं मिला था। ''उनकी कोई चिह्नानि'' वाज़्यांश (17:18) का मूल भाषा में अर्थ ''उनका चिह्न'' है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि दाऊद ने इस बात के प्रमाण के लिए कि वे सब ठीक-ठाक हैं, उनकी कोई निशानी लेकर आनी थी। ''और दाऊद बिहान को सवेरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिए ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुंचा'' (17:20)।

मुझे यकीन है कि एला घाटी की ओर जाते समय दाऊद के दिमाग में दानव से लड़ने की बात बिल्कुल नहीं होगी। वह सुबह भी दूसरे दिनों की तरह ही थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि दाऊद अपने भाइयों और वहां उपस्थित लोगों को देखने को बेताब था परन्तु उसे यह बिल्कुल पता नहीं था कि आगे ज़्या होने वाला है, अर्थात उसे एक दानव से मुलाकात होने का कोई अंदेशा नहीं था।

जब आपके जीवन में दानव आते हैं तो वह दिन भी दूसरे दिनों की तरह ही होता है। आप सुबह उठते हैं। अपनी दिनचर्या के अनुसार काम करते हैं। हो सकता है कि यह दिन अच्छा हो या हो सकता है कि बहुत अच्छा न हो, परन्तु यह आपके जीवन के दूसरे अधिकतर दिनों जैसा ही होता है। फिर एक पत्र ... या टेलीग्राम आता है ... या टेलीफोन की घंटी बजती है या कोई आदमी आता है। शायद आपको आपके नियोज़्ता के दज़्तर में बुलाया गया है ... या आप किसी परेशान करने वाली परन्तु छोटी सी शारीरिक समस्या के लिए डॉज़्टर को दिखाने जाते हैं ... या आपकी पत्नी कहती है, ''मुझे आपसे कोई बात करनी है।'' अचानक दानव हमें घेर लेता है।

दाऊद एला नामक तराई में पहुंचकर अपनी चीज़ें सामान के रखवाले के पास छोड़कर अपने भाइयों को देखने के लिए चला गया। वह उनसे बात ही कर रहा था, ''कि पलिश्तियों की पांतियों में से वह वीर, अर्थात, गतवासी गोलियत नामक वह पलिश्ती योद्धा आया, और पहिले की सी बातें कहने लगा'' (17:23)। आयत 10 में ये शज़्द मिलते हैं, ''मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।'' गोलियत के शज़्दों में पाए जाने वाले ताने या व्यंग्य की कल्पना करें: ''मैं चालीस दिन से यहां खड़ा हूं! इज़्यासिवीं बार मैंने यह चुनौती दी है! ज़्या सारे इस्राएल में किसी की हिज़्मत नहीं है कि मेरा सामना कर सके?''

आयत 23 में टिप्पणी है, ''और दाऊद ने उन्हें [अर्थात गोलियत की बातों को] सुना।'' वह इस तथ्य को नज़रअंदाज नहीं कर पाया कि एक दानव उसके जीवन में आ गया है। इसे लिख कर रख लें कि आज या कल कभी न कभी आपको दानव का सामना करना ही पड़ेगा।

II. आप दानव का सामना विश्वास से या भय से कर सकते हैं (17:24-27)

बाइबल का यह हवाला सिपाहियों के भय और दाऊद के विश्वास में भिन्नता दिखाता है। आयत 11 ध्यान दिलाती है, ''उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे सब डर गए।'' आयत 24 कहती है, ''उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से भागे।''

जब दाऊद अपने भाइयों से बातें कर रहा था तो दानव ने बाहर आकर अपनी चुनौती फिर दोहराई। दाऊद को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ! ''आपने सुना कि उस पलिश्ती ने ज़्या कहा?'' किसी ने उज़्र नहीं दिया। दाऊद ने इधर-उधर देखा और कोई उसके पास नहीं था। दूसरे सब लोग सुरक्षित जगह में पचास फुट पीछे हो गए थे! ''उस [दानव] को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से *भागे*।''

दाऊद वहां गया जहां सैनिक डरकर बैठे थे और सिपाही उस स्थिति के विषय में बातें कर रहे थे। ज़्योंकि किसी ने भी उस दानव से लड़ने के लिए अपने आप को प्रस्तुत नहीं किया था इसलिए शाऊल ने ''बर्तन में गुड़ लगा दिया'' था। उसने ऐलान कर दिया कि ''जो कोई उस पलिश्ती को मार डालेगा, मैं उसे धनवान बना दूंगा। मैं अपनी बेटी का विवाह उससे कर दूंगा,[11] और उसके पिता का घराना स्वतन्त्र कर दिया जाएगा'' जिसका अर्थ था कि उसे सरकारी करों और सेवा से छूट दे दी जाएगी।

आइए जरा रुककर इस प्रश्न पर विचार करते हैं: इस्राएल की ओर से सिपाहियों की पांती में से युद्ध लड़ने के लिए जाने के लिए उचित व्यज़्ति कौन था? वहां सबसे ऊंचा और अच्छी डील-डौल वाला अर्थात उस दैत्य जितना बड़ा कौन था? स्वयं शाऊल (1 शमूएल 10:23) लेकिन वह डरता था (1 शमूएल 17:11), सो उसने अपने लोगों के सामने ये प्रलोभन रखे।

मुझे विश्वास है कि इन आकर्षक पुरस्कारों का ध्यान दाऊद के दिमाग में भी आया होगा। दाऊद की परेशानी इसलिए थी कि *परमेश्वर* के नाम की निंदा हुई थी। उस की किसी पुरस्कार में रुचि नहीं थी बल्कि वह तो अपने परमेश्वर के सज़्मान के विषय में चिंतित था। आयत 26 के अंत में दाऊद के शज़्दों पर ध्यान दें: "... वह खतनारहित पलिश्ती तो ज़्या है कि *जीवित परमेश्वर* की सेवा को ललकारे ?"

हम सब में दाऊद का मन होना आवश्यक है! हर रोज़ परमेश्वर के नाम की निंदा होती सुनते हमें इसकी आदत पड़ जाती है। हम कठोर हो जाते हैं और इस पर ध्यान नहीं देते। लेकिन दाऊद क्रोधित हो गया था! वे जीवित परमेश्वर का अपमान कर रहे थे। "कोई इसका कुछ करता ज़्यों नहीं है ?!"

जब दानव हमारे जीवन में आते हैं, तो हो सकता है कि हम या तो डर जाएं या परमेश्वर में विश्वास रखते हुए उनका सामना करें। या तो हम उससे हार मान लें या फिर परमेश्वर के नाम को महिमा देने के लिए उनका सामना करने के अवसर के रूप में देख सकते हैं।

III. आपको निराश करने के लिए कोई न कोई अवश्य होगा (17:28-33)

आपको लगता होगा कि जब व्यज़्ति के जीवन में समस्याएं आती हैं, तो हर कोई उसकी सहायता करने, उसे समर्थन देने और सहारा देने के लिए आ जाता है परन्तु यह सत्य नहीं है। इसके बजाय कोई न कोई ऐसा अवश्य होगा जो यह कहना चाहता हो, "तुम यह नहीं कर सकते। तुम में इसे करने की क्षमता नहीं है। अच्छा होगा कि तुम न ही करो।"

जब दानव से लड़ने की बात आई, तो दाऊद के पिता ने पहले ही कह दिया था, *"तू बहुत छोटा है।"* यिशै ने अपने तीन बड़े बेटों को सेना में भर्ती होने के लिए भेज दिया था परन्तु दाऊद को नहीं।

अब दाऊद के भाई ने कह दिया, "तू अभी बच्चा है।"

> जब दाऊद उन पुरुषों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा, तू यहां ज़्यों आया है ?[12] और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़-बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है ? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिए यहां आया है (17:28)।

याद रखें कि एलीआब कौन था। वह अगले राजा का अभिषेक करने के लिए शमूएल के वहां आने के समय सबसे पहले घर पहुंचा था। शमूएल को लगा था कि "वही उसका अभिषिज़्त होगा!" परन्तु परमेश्वर ने शमूएल के कंधे पर अपना हाथ रखकर कहा था, "नहीं, यह वह नहीं है। मैं मनुष्य की तरह बाहर से नहीं देखता। मैं तो मन देखता हूं" (देखें 1 शमूएल 16:6, 7)। फिर एलीआब को अपने सबसे छोटे भाई दाऊद के सिर पर सींग का

तेल उंडेलते हुए देखना था। ईर्ष्या उसे खाए जा रही थी। उसने दाऊद के उद्देश्यों और उसके मन का अपमान किया था।

दाऊद की स्वाभाविक प्रतिक्रिया अपने भाई के साथ लड़ाई करने की होनी थी। ज़्या आपके कोई भाई या बहन हैं ? ज़्या आपका उनसे कभी झगड़ा हुआ है ? यदि दाऊद हमारी तरह होता, तो उसकी एलीआब से यह पहली लड़ाई होनी थी। दानवों का सामना करते हुए हम अज़्सर ऐसा ही करते हैं। दानवों से लड़ने के लिए अपनी शज़्ति का इस्तेमाल करने के बजाय हम लोगों से लड़ने लगते हैं। हम अप्रसन्न होते हैं और अपना क्रोध अपने आस-पास के लोगों पर निकालकर अपनी शज़्ति का ह्रास करते हैं जिसका इस्तेमाल दानवों को हराने के लिए किया जाना चाहिए था।

परन्तु दाऊद ने अपने भाई के साथ लड़ाई में पड़ने से इन्कार कर दिया। जिस कारण उसने कहा, ''तुम ऐसा ज़्यों कह रहे हो ? मैंने कोई गलत नहीं किया'' (देखें 1 शमूएल 17:29)। फिर वह मुड़कर किसी और से बात करने लगा। नीचे घाटी में एक दानव के होते हुए वह अपने लोगों के डेरे में से किसी से लड़ने वाला नहीं था।[13]

दाऊद की बातें शाऊल के कान में पड़ीं और शाऊल ने दाऊद को बुला लिया। दाऊद ने राजा से कहा, ''किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा'' (17:32)।

अब शाऊल दाऊद को हतोत्साहित करने की कोशिश करता है। उसने कहा, ''तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकता; ज़्योंकि तू तो लड़का ही है'' (17:33)।[14] ''तुझे ज़्या मालूम कि युद्ध कैसे किया जाता है ? तू अभी बच्चा है जिसे अपनी भेड़ों की देखभाल करनी चाहिए। दूसरी ओर यह दानव तो बचपन से ही युद्ध की शिक्षा ले रहा है। नहीं, *तुझे कोई अनुभव नहीं है।''*

हर किसी ने इस युवक को गोलियत से लड़ने से रोकने की कोशिश की। कुछ समय बाद दानव ने स्वयं कहा, *''तू तो बच्चा है ! तू कमजोर है ! तेरे पास तो हथियार भी नहीं हैं !''* (देखिए 17:42, 43)।

जब आप किसी दानव का सामना करते हैं, तो आपको बहुत सी निराशाजनक बातें सुननी पड़ती। वे आपके परिवार की ओर से भी हो सकती हैं (जैसे दाऊद के पिता और उसके भाई ने उसे हतोत्साहित किया था), वे किसी ऐसे व्यज़्ति की ओर से हो सकती हैं जिसे आप अपना मित्र मानते हैं (याद रखें कि दाऊद पहले शाऊल के लिए वीणा बजाया करता था)। या किसी ऐसे व्यज़्ति की ओर से हो सकता है जो (गोलियत की तरह) आपको पसन्द न करता हो। आप देख सकते हैं कि किसी न किसी प्रकार रुकावटें तो आ ही जाएंगी। उनके लिए अपना मन तैयार करें और यदि लोग यह कहें कि ''तुम यह नहीं कर सकते!'' तो अचज़्भा न करें।

IV. अपने दानवों से भेंट से पहले तैयारी अवश्य करें (17:34-37)

यदि आप सोचते हैं, ''मैं समस्या के पैदा होने तक प्रतीक्षा करूंगा और फिर उसका सामना करूंगा'' तो हो सकता है कि गोलियत जैसा कोई आपको पीछे से आकर चिज़ कर दे। अपने दानवों का सामना करने के लिए *पहले* आपको तैयार होना चाहिए।

दाऊद ने गोलियत का सामना करने के लिए पहले ही भेड़ों की देखभाल करते हुए शेरों और भालुओं का सामना करके अपने आप को तैयार कर लिया था। जब शाऊल ने दाऊद का हौसला तोड़ने की कोशिश की तो दाऊद का जवाब था:

> तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियां चराता था; और जब कोई सिंह वा भालू झुंड में से मेज़ना उठा ले गया, तब मैंने उसका पीछा करके उसे मारा, और मेज़ने को उसके मुंह से छुड़ाया; और जब उसने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैंने उसके केश को पकड़कर उसे मार डाला। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला; और वह खतनारहित पलिश्ती उसके समान नाश हो जाएगा, ज़्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है (17:34-36)।

दाऊद ने गोलियत से युद्ध करने की तैयारी मैदान में नहीं बल्कि चरागाह में की थी। उसे शेरों और भालुओं का सामना करने की *आवश्यकता* नहीं थी। यदि वह उनके सामने से भाग भी जाता तो भेड़ों के सिवाय किसी को पता नहीं चलना था और उन्होंने किसी को बताना भी नहीं था। उसे इन खतरनाक जन्तुओं का सामना करने के लिए कर्ज़व्य को निभाने का कोई पुरस्कार नहीं मिला। उसने ''आज का नायक'' के रूप में रात दस बजे की खबरों के लिए तस्वीर नहीं खिंचवाई थी। किसी भेड़ ने उसे ''धन्यवाद'' भी नहीं कहा था। (भेड़ें तारीफ़ करने में कंजूस होती हैं)! शेरों तथा भालुओं का सामना करना एक चरवाहे का काम था और दाऊद ने अपना काम किया था।

जीवन से भेंट या सामना करने के लिए आपकी तैयारी अन्दर से ही होती है। कहने का मतलब यह कि छोटे-छोटे दानवों का सामना करके ही जीवन में आने वाले बड़े दानवों के लिए तैयारी होती है। जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं को अनदेखा करके आप बड़ी-बड़ी समस्याओं को न्यौता देते हैं, परन्तु उनका सामना डटकर करके परमेश्वर की सहायता से उन्हें पराजित कर देते हैं।

गोलियत से लड़ने के लिए दाऊद की सबसे अच्छी तैयारी परमेश्वर के साथ अपना सज़्बन्ध बनाने की है। ध्यान दें कि शेरों और भालुओं को मारने की बात कहते हुए उसने सारा श्रेय किसे दिया: '' *यहोवा* जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा'' (17:37क)। दाऊद का विश्वास परमेश्वर में था। ''वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4)।

इस नवयुवक का जो शाऊल की सेना में भर्ती भी नहीं हुआ था परमेश्वर में विश्वास कैसे बढ़ा? उसका विश्वास वैसे ही बढ़ा था जैसे उसके भाई और शाऊल का विश्वास बढ़

सकता है, जैसे हम में से हर किसी का विश्वास बढ़ सकता है। उसने परमेश्वर और परमेश्वर के वचन पर ध्यान किया और उन सब विजयों पर भी जो परमेश्वर ने उसे दी थीं (रोमियों 10:17)।

हमारी समस्या यह है कि हम भूल जाने वाली बात को याद रखते हैं और याद रखने वाली बात को भूल जाते हैं। हम अपनी असफलताओं को तो याद रखते हैं परन्तु उन विजयों को जो परमेश्वर ने हमें दी हैं, भूल जाते हैं। सी. एच. स्पर्जन ने टिप्पणी की है, ''हम अपने लाभों को तो धूल में परन्तु घावों को संगमरमर पर लिखते हैं। ... हम ... अपने कष्टों को तो धातु पर, परन्तु परमेश्वर द्वारा दिए गए छुटकारों को पानी पर लिखते हैं।''[15] यदि, पिछली पराजयों को याद करने के बजाय हम यह याद रखें कि परमेश्वर हमें हमारी समस्याओं से निपटने के लिए कैसे सहायता करता रहा है, तो हम अपने जीवन में आने वाले बिन बुलाए गोलियतों का सामना करने को तैयार होंगे।

V. अच्छी तरह से तैयारी करें और परमेश्वर पर निर्भर रह (17:37-47)

शाऊल अवश्य ही निराश हो गया होगा; मुझे कोई ऐसा कारण नहीं लगता कि वह इस लड़के को उस दैत्य से लड़ने के लिए भेजे।[16] शाऊल ने दाऊद से कहा, ''जा, यहोवा तेरे साथ रहे'' (17:37ख)। ज़्या यह दुखद नहीं लगता कि राजा यह तो जानता था कि विश्वास ज़्या होता है (1 शमूएल 23:21 भी देखिए), परन्तु विश्वास से चलता नहीं था? यदि शाऊल का विश्वास सचमुच परमेश्वर था कि परमेश्वर दाऊद के साथ होकर उसे विजय देगा, तो शाऊल स्वयं भी युद्ध के मैदान में जा सकता था!

हम दाऊद के आस-पास के लोगों के आत्मविश्वास की कमी की तुलना दाऊद के विश्वास से करके प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। दाऊद का आत्मविश्वास कम से कम तीन कारणों से था। पहला, उसमें यह आत्मविश्वास *अपनी शिक्षा* के कारण आया था। 17:38, 39 में यह सुझाव मिलता है।

इन पदों में शाऊल द्वारा दाऊद को अपना कवच पहनाने का दृश्य हास्यापद लगता है। पता नहीं कि शाऊल ने दाऊद को अपना कवच ज़्यों पहनाना चाहा। शायद शाऊल को इसका श्रेय मिलने की उज़्मीद थी (जैसे कोई कहे, ''उसने *मेरी* बन्दूक से उस भालू को मारा'')। जो भी कारण हो[17] दाऊद को टोप, तलवार और अन्य सामग्री देकर शाऊल के वस्त्र पहनाए थे। बाइबल आगे कहती है, ''[उसने] चलने का *यत्न किया*'' (17:39क)। कल्पना करें कि दाऊद का साइज़ तो सामान्य 34 है परन्तु शाऊल का 48 है! लड़ना तो दूर वह उन वस्त्रों को पहनकर चल भी नहीं सकता था! दाऊद ने वे वस्त्र उतार दिए और कहा, ''इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता, ज़्योंकि मैं ने नहीं परखा'' (17:39ख)।

अन्य शज़्दों में, उसने कहा, ''मैं वही रखूंगा जो मेरा परखा हुआ है।'' उसे इसी बात में भरोसा था कि जो उसका परखा हुआ है और जो पहले उसके काम आया था उससे ज़्या किया जा सकता है। वह ज़्या था? उसे मालूम था कि वह गोफन में पत्थर रखकर उसको

घुमाकर फैंक सकता है। उसे अपनी दीक्षा में पूरा भरोसा था।

इसमें दूसरे *"औ"* का सुझाव मिलता है क्योंकि दाऊद को *अपने औज़ारों* पर भी भरोसा था। उसके पास अपनी लाठी[18] जिसके साथ उसने शेरों और भालुओं को मारा था, से अधिक खतरनाक हथियार नहीं था (17:35; भजन संहिता 23:4 भी देखिए)। लेकिन गोफन उसके पास अवश्य था (17:40)।

आप जानते होंगे कि "गोफन" किसे कहते हैं। बचपन में, हम जो वाली लकड़ी लेकर, उसके एक सिरे को पुरानी ट्यूब से कसकर दूसरी ओर के दो सिरों पर रबड़ की दो नलियों को अलग-अलग बांधकर उन्हें पुराने जूते को काटकर बनाई एक जीभी लगाया करते थे। उसे हम गुलेल कहते थे। दाऊद के "हाथ में" गुलेल *नहीं* थी। दाऊद का गोफन एक चमड़े की थैली थी जिसके दोनों ओर एक चमड़े की लम्बी पतली पट्टी लगी थी। इस गोफन का इस्तेमाल करने के लिए, थैली में पत्थर रखकर, उस पट्टी के सिरों को हाथ से पकड़कर ज़ोर से सिर के ऊपर से घुमाकर उसके एक सिरे को छोड़ दिया जाता है। बचपन में मैं जूते की जीभी और तस्मों से कई बार गोफन बनाता और इसे चलाने की कोशिश करता था। मैं जीभी में छोटा पत्थर रखकर उस गोफन को अपने सिर के ऊपर से घुमाकर एक सिरे को छोड़ देता। वह पत्थर निशाने की ओर जाकर किसी चीज़ को तोड़ ही देता था। मैंने इतनी चीज़ें तोड़ीं कि अंत में मेरी मां ने मुझ से यह छुड़वा ही दिया। यह बहुत खतरनाक हथियार है!

परन्तु, इस छोटे से औज़ार से इतनी निपुणता पा लेना आश्चर्य की बात थी। न्यायियों 20:15, 16 सात सौ बचे हुए बिन्यामीनियों के बारे में बताते हुए कहता है, "सब के सब ऐसे थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल भर भी न चूकते थे"! रॉय ओसबर्न एक बार फलस्तीन गया था।[19] वह छाया में एक पहाड़ी पर बैठे बकरियां चराने वाले एक लड़के के पास गया। उसकी बकरियां सौ गज़ या इससे अधिक दूर थीं। लड़का अपने गोफन के साथ इस झुंड की निगरानी कर रहा था। यदि कोई बकरी इधर-उधर चली जाती, तो वह उस बकरी को झुंड में लाने के लिए उसके आगे एक पत्थर फैंक देता था। रॉय ने उस लड़के के पास जाकर उसे कुछ दूरी पर अंजीर के एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा कि वह उस पर पत्थर मारे। लड़के ने अपने गोफन में एक पत्थर डाला और गोफन को इतनी तेजी से घुमाया कि वह दिखाई देना बंद हो गया। लड़के ने उसे छोड़ा और पत्थर उस पेड़ के तने में धंस गया।

स्पष्टतया दाऊद भी ऐसा ही निपुण होगा। "जब उसने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पांच चिकने[20] पत्थर छांटकर अपनी चरवाही की थैली अर्थात अपने झोले में रखे" (17:40क)। दाऊद कोई हथियार लेकर नहीं बल्कि एक लाठी लेकर पहाड़ी पर गया। जब वह घाटी के मध्य में एक नदी के तट पर आया तो वहां से उसने पांच चिकने पत्थर ले लिए। ध्यान दें कि उसने कोई भी पांच सामान्य पत्थर नहीं बल्कि चिकने पत्थर चुने। एक पत्थर उठाकर उसने कहा होगा। "नहीं, इससे बात नहीं बनेगी।" फिर उसे परे फैंक दिया। दूसरा पत्थर उठाया। "यह ठीक रहेगा।" इस तरह अपनी पसन्द के पत्थर मिलने तक वह ढूंढ़ता

रहा। ध्यान से उसने काम के एक, दो, तीन, चार और पांच पत्थरों को चुना। उसके पास चरवाहे का एक छोटा थैला था। आम तौर पर इसमें उसका दोपहर का भोजन होता था, परन्तु आज उसने उसमें पांच पत्थर रखे। अब वह उस दानव से लड़ने को तैयार था।

तंग घाटी में से आते इस लड़के को,[21] पत्थर उठाते हुए दोनों सेनाओं के लोगों द्वारा देखते हुए, ज़्या आप लोगों द्वारा इस होने वाले मुकाबले पर किए जाने वाले व्यंग्य की कल्पना कर सकते हैं। पांच चिकने पत्थर लेकर उस दैत्य की ओर बढ़ते हुए आपको ज़्या लगता है कि ''निशाने पर लगने वाला पत्थर'' कौन सा था?

निः संदेह आत्मविश्वास के साथ दाऊद का आगे बढ़ना उसकी शिक्षा और हथियारों के कारण ही नहीं था। वह *अपने भरोसे* के कारण आत्मविश्वास से भरा हुआ था। वह अपने परमेश्वर पर निर्भर था।

40 और 41 आयतें दो लड़ने वालों में गहरा अन्तर बताती हैं: ''अपना गोफन हाथ में लेकर वह उस पलिश्ती के निकट चला। और पलिश्ती चलते-चलते दाऊद के निकट पहुंचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला।'' पश्चिम की ओर से एक महान कवचधारी योद्धा आया था, जिसका जबर्दस्त झिलम, उसका पीतल का टोप धूप में चमक रहे थे। पूर्व की ओर से एक छोटा गुलाबी गालों वाला लड़का चोगा और जूते पहने, बकरे के बाल का गोफन लिए आया।[22]

उस दानव ने दाऊद को देखा तो उसे शर्म आई।

> जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; ज़्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, ज़्या मैं कुज़्ा हूं, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है? तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा (17:42, 43)।

गोलियत ने दाऊद को दागोन, बाल और अपने अन्य देवताओं के नाम से कोसकर बहुत बड़ी गलती की। उसने एक सैनिक युद्ध को धार्मिक दंगल में बदल दिया! यह युद्ध ''परमेश्वर बनाम देवताओं'' में बदल गया।

गोलियत ने दाऊद को डराने की कोशिश की: ''मेरे पास आ, मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और बन पशुओं को दे दूंगा'' (17:44)।[23] चुनौतियां हमें भी डराती हैं, या नहीं? आम तौर पर यदि हम अपने घुटनों को भिड़ने से रोक लें तो अपने दानवों का सामना कर सकते हैं।

यह युज़्ति मुझ पर काम कर जाती। यदि साढ़े नौ फुट लज़्बा विकटाकार आदमी मुझसे कहता कि वह मेरा मांस पक्षियों को डालने वाला है तो मैं तो पथरा ही जाता। परन्तु दाऊद ने उससे आतंकित होने के बजाय गोलियत की धमकी को बाइबल में विश्वास की सबसे बड़ी अभिव्यज़्तियों में से एक बना दिया:

> दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूंगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा;[24] ... तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा (17:45–47)।

"संग्राम तो यहोवा का है।" यदि आपने इस लाइन को रेखांकित नहीं किया, तो कर लें। दाऊद का जीवन एक सिद्धांत पर आधारित था। उसे कुछ सिद्ध करने की या कुछ खोने की आवश्यकता नहीं है। वह किसी को प्रभावित करने का प्रयास नहीं कर रहा था। वह केवल अपने परमेश्वर का पक्ष ले रहा था। वह चाहता था कि सब लोग जान लें कि परमेश्वर केवल एक ही है और जय उसी की है।

मैंने सुझाव दिया है कि आप जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने की तैयारी करें। परन्तु कई बार, आपको किसी कोने में एक ऐसे बड़े दानव का सामना करना पड़ सकता है जो इतना बड़ा हो कि उसके सामने आपकी सारी शिक्षा, सारे हथियार अपर्याप्त होंगे। तब यह याद रखना आवश्यक है कि "संग्राम तो यहोवा का है"! अन्त में आत्मविश्वास से भरपूर जीवन जीने का ढंग वह भरोसा है जो परमेश्वर में है। हम गीत *गाते हैं* कि "विश्वास से जय है"[25] परन्तु दाऊद ने इसे *जीया*।

VI. यदि आपके सामने दानव है, तो *तुरन्त* उसका सामना करें (17:48-51)

पांच चिकने पत्थर उठाने के बाद दाऊद न तो रुका और न हिचकिचाया बल्कि गोलियत का सामना करने के लिए *भागा*।

> जब पलिश्ती उठकर दाऊद का साम्हना करने के लिए निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का साम्हना करने के लिए फुर्ती से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उस में से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया और वह भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा (17:48, 49)।

दाऊद ने चरवाहे की अपनी थैली में हाथ डाला, उसमें सबसे बड़ा पत्थर ढूंढ़ा, उसे बाहर निकाला, इसे गोफन में डालकर, गोफन को जोर से अपने सिर के ऊपर से घुमाया। गोफन से आवाज़ आने लगी और फिर वह आवाज़ गूंजी। उसके बाद, टंकार! –दाऊद ने पत्थर छोड़ दिया था। यह हवा में शोर करता हुआ गोलियत के माथे में जा घंसा। गोलियत ऐसे गिर

गया जैसे उसे गोली लगी हो। उसके धड़ाम से ज़मीन पर गिरने से, ज़मीन हिल गई।

दाऊद का काम अभी खत्म नहीं हुआ था। ज़्या पता वह दानव अभी बेहोश ही हुआ हो। दाऊद फिर *दौड़ा* (17:51)। वह उस गिरे हुए शरीर के ऊपर चढ़ गया। उसके पास कोई तलवार नहीं थी,[26] इसलिए उसने गोलियत की ही तलवार निकाल ली। (''ज़्या मैं आपकी तलवार ले सकता हूं, कि आपका सिर काट सकूं ? धन्यवाद।'') बड़े ''सनक'' से यह वीभत्स कार्य पूर्ण हुआ।

यह नाटकीय विजय हमें सिखाती है कि विजय आकार या शारीरिक सामर्थ से नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ सज़्बन्ध के कारण मिलती है। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए। इस विजय से हमें यह भी सीख मिलती है कि जब दानव या दैत्य आपके साथ लड़ने को तैयार हो तो आप उसे टालें नहीं। जितने दिन तक आप किसी चुनौती का सामना करने को टालते रहेंगे तब तक वह दानव हर रोज़ तीन फुट ऊंचा बढ़ता जाएगा! हर दिन गुज़रने से वह समस्या और जटिल होती जाएगी। इसलिए अपने जीवन में आने वाले दानवों का सामना परमेश्वर की सहायता से और तुरन्त करें!

VII. एक विजय से दूसरी विजय के लिए मार्ग खुलता है (17:51-54)

दाऊद को जीवनभर, एक विजय से अगली विजय के लिए तैयारी मिली। शेरों और भालुओं पर उसकी विजयों से उसे यह विजय पाने के लिए तैयारी मिली। अब यह विजय उसकी दूसरी विजयों के लिए मार्ग तैयार कर रही थी। सर्वप्रथम दाऊद की विजय से इस्राएल की सेना को सहायता मिली। लिन्न एंडर्सन द्वारा इसे इन शज़्दों में व्यज़्त करना मुझे अच्छा लगता है: ''दाऊद का कार्य *साहसिक* होने के साथ-साथ *दूसरों को प्रभावित करने वाला* भी था।''[27]

मैं दाऊद के गोलियत को मारने के बाद के दृश्य की कल्पना कर सकता हूं। उसने पलिश्ती सेना की ओर देखा; उनका ध्यान उसी पर था, आंखें भौराई हुई थीं और मुंह खुले के खुले थे। दाऊद ने एक और पत्थर निकाला, उसे अपने हाथ में लिया और ललकारा, ''है कोई और माई का लाल ?[28] अभी चार पत्थर हैं!'' पवित्र शास्त्र कहता है कि ''यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए'' (17:51ख)।[29] तब इस्राएली, जो बहुत डरे हुए थे, जयघोष करते हुए पहाड़ी की ओर नीचे आ गए, ''मुझे एक दानव दो! मैं भी मारूंगा!'' ''इस पर इस्राएल और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और ... पलिश्तियों का पीछा करते गए'' (17:52क)। दाऊद के उदाहरण से उसके साथी इस्राएली उत्साहित हुए।

दाऊद की इस विजय ने बाद के युद्धों में दाऊद को भी प्रोत्साहन मिला। आयत 54 कहती है, ''और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में धर लिए।'' गोलियत का सिर यरूशलेम में ले जाया गया।[30] (उसका सिर दाऊद अपने घर ज़्यों नहीं ले गया ? मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि उसकी मां ने उसे घर में रखने दिया होगा!) लेकिन गोलियत के हथियार दाऊद अवश्य अपने घर ले गया।[31] हर रात

सोने से पहले दाऊद उन हथियारों को देखकर कहता होगा, ''परमेश्वर ने मुझे विजय दिलाई। संग्राम सचमुच यहोवा का है!'' हर सुबह उठकर वह उन्हें देखकर कहता होगा, ''परमेश्वर ने मुझे विजय दिलाई। संग्राम सचमुच यहोवा का है!'' सुबह-शाम, हर रोज उसे याद करके जब आप परमेश्वर के साथ रहते हैं तो वह आपको विजय देता है।

जब भी परमेश्वर आपको कोई विजय दे, तो अपने हृदय में उस अद्‌भुत घटना की सब बातों को बसा लें। परमेश्वर नहीं चाहता कि आप एक भी विजय को व्यर्थ समझें; वह कहता है, ''इसे न भूलना!'' भविष्य में आने वाले युद्धों का सामना करने के लिए इससे अधिक सामर्थ और कहीं से नहीं मिल सकती!

सारांश

''हमारे स्वर्गीय पिता, बहुत से लोगों के सामने ऐसी समस्याएं हैं जो उन्हें कई बार परेशान कर देती हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप हर किसी के साथ होकर उसे सामर्थ दें। हमारी सहायता कर कि हम जीवन की किसी भी बात के लिए तैयार होने के लिए पूरा प्रयास करें, परन्तु अंत में हमें सिखा कि हम तुझ पर निर्भर रहें ताकि जीत हमारी हो। हमें यह जानने में सहायता कर कि यदि तू हमारे साथ है तो कुछ भी असम्भव नहीं हो। सबको अपनी आशीष से भरपूर कर। मांगते हैं अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के नाम से। आमीन।''

दानवों के साथ युद्ध करना अकेले का काम हो सकता है। जब दाऊद ने युद्ध के मैदान में कदम रखा, तो शाऊल और उसकी सेना उसके साथ नहीं थे। वह अकेला था केवल परमेश्वर ही उसके साथ था। दानवों का सामना करने के लिए आपको परमेश्वर का साथ चाहिए।

टिप्पणियां

[1]इस संदेश की अधिकांश सामग्री कई स्रोतों से ली गई है, इसलिए मैं मूल स्रोत को श्रेय नहीं दे सकता। [2]पलिश्तियों के साथ युद्ध होता रहता था (देखिए 1 शमूएल 14:52)। लगभग इक्कीस वर्ष पहले शाऊल ने पलिश्तियों को मिकमाश में पराजित किया था। [3]एला नामक तराई यहूदा के उज़ाड़ पश्चिम में थी। यह पलिश्तीन के मैदान से यहूदा की पहाड़ियों तक फैला एक बड़ा दर्रा था। [4]''हाथ'' कोहनी से लेकर बड़ी अंगुली के सिरे तक लगभग 18 इंच होता था। ''बित्ता'' हाथ की चौड़ाई को कहा जाता था जो पांच इंच के लगभग होती थी। आज बास्किटबॉल का सबसे लम्बा खिलाड़ी सात फुट से थोड़ा अधिक होगा। संसार का जीवित सबसे लम्बा व्यक्ति 8 फुट से कुछ लम्बा है। गोलियत लम्बा था! संयोग से पुरातत्व विज्ञानियों को वहां से जहां पलिश्ती रहते थे, इतने आकार के पिंजर मिले हैं। [5]यह तर्कहीन अनुमान नहीं है जब यह ध्यान रखा जाए कि वह 200 पौंड [लगभग 74 किलो ग्राम] से अधिक भारी हथियार लेकर चलता था। [6]उसकी टांगों पर पीतल के कवच भी होते थे (17:6); वे उसके घुटने से नीचे सामने की हड्डी की रक्षा के लिए थे। [7]उसके लिए चमड़े का एक विशेष सूट बनाया गया था। फिर चमड़े जैसे पतरों पर धातु की प्लेटें बांधी गई थीं। यह कवच घुटनों तक होता था। [8]क्योंकि अलग-अलग देशों में भार के माप अलग-अलग होते हैं इसलिए पांच हज़ार शेकेल पीतल का

सही–सही तौल नहीं बताया जा सकता (17:5)। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह 200 पौंड तक होगा। [9]टिप्पणी 8 देखें। छह सौ शेकेल लोहे का भार केवल अनुमान ही है (17:7)। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह 25 पौंड होगा। [10]कुछ लेखक उसकी आयु बीस के लगभग बताते हैं।

[11]शाऊल किसी बदसूरत बेटी से पीछा छुड़ाने की कोशिश नहीं कर रहा था! यह प्रलोभन देने वाली बात थी। राजा की बेटी से विवाह करने का अर्थ शाही परिवार का सदस्य बनना था। [12]*द बर्कले वर्ज़न इन मॉडर्न इंग्लिश* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौंडर्वन, 1960) में ''तू यहां ज़्या लेने आया है?'' है। [13]यह बात हमें कलीसिया में सीखनी आवश्यक है। कई बार हम उन दानवों की ओर ध्यान देने के बजाय अपने आप से ही लड़ते हैं! [14]यह अध्याय 1 शमूएल 16:7 की सच्चाई को समझाता है। [15]सी. एच. स्पर्जन, *द टरयरी ऑफ़ द बाइबल,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौंडर्वन, 1968), 660. [16]कुछ लोगों का सुझाव है कि शाऊल को पता था कि दाऊद नये राजा के रूप में अभिषिज़्त हो चुका है और शाऊल ने यह सोचकर कि वह मारा जाए उसे उस दैत्य के साथ लड़ने की अनुमति दे दी। मुझे लगता है कि शाऊल के बाद के काम इस प्रेरणा से मेल नहीं खाते। एक और सुझाव दिया गया है कि दाऊद इतना ज़िद्दी था कि शाऊल ने अंतत: उसकी बात मान ही ली चाहे शाऊल को लगता था कि उससे बात नहीं बनेगी। ''ठीक है, ठीक है, जा और तू भी कोशिश करके देख ले।'' [17]सुझाव दिया गया है कि शाऊल ने दाऊद को हतोत्साहित करने के लिए अपने वस्त्र पहनाये, ताकि उसे पता चल जाए कि युद्ध में सुरक्षा के लिए आवश्यक वस्त्र वह नहीं पहन सकता। [18]1 शमूएल 17:40 वाली ''लाठी'' सज़्भवत: चरवाहे की लाठी को कहा गया है जिसे वह साथ रखता था। [19]यह कहानी लिन्न एंडर्सन, ''फेसिंग जॉयन्ट्स'' (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं), साउंड कैसेट से ली गई थी। [20]ये पत्थर बहते पानी में घिसकर गोल हुए होंगे। ऐसे पत्थर निशाना लगाने के लिए बहुत सही हो सकते थे।

[21]यह नाला, जो आज भी तराई में से बहता है, साल में अधिकतर समय सूखा रहता है। [22]किसी ने इसे भ्रामक जैट से मिलने के लिए एक खतरनाक बम चलाने वाले के रूप में चित्रित किया है। [23]गोलियत दाऊद की लाश को जंगली जानवरों के खाने के लिए युद्ध के मैदान में ही छोड़ देने की धमकी दे रहा था। [24]कई प्रचारक इसे इस प्रकार कहते हैं, ''मैं तेरी गर्दन इतनी आसानी से काट सकता हूं कि तुझे छींक भी नहीं आने दूं!'' [25]''विश्वास ही विजय है'' इस पाठ से पहले गाने के लिए अच्छा गीत है। [26]लोहे के बने हथियारों पर पलिश्तियों का अधिकार था (नोट 1 शमूएल 13:19–22)। [27]लिन्न एंडर्सन, *फाइंडिंग द हार्ट टू गो ऑन* (सैन बरनार्डिनो, कैलिफो.: हेयर'स लाइफ़ पज़्लिशर्स, 1991), 44. [28]पलिश्तीन में और भी शूरवीर *थे* (2 शमूएल 21:15–22)। बाद में इन्हें पराजित किया गया था; यह दाऊद की विरासत थी। (इस सज़्बन्ध में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि किसी और द्वारा एक और दानव मारा गया था और उसका नाम भी गोलियत था। देखिए 2 शमूएल 21:19)। [29]पलिश्तियों ने अपने सेनापति के मारे जाने के बाद इस्राएलियों के आगे समर्पण करके उनके दास बन जाना था। पलिश्तियों से इतना सज़्मान मिला था। [30]ज़्योंकि दाऊद ने राजा बनने से पहले यरूशलेम पर कज़्जा नहीं किया (2 शमूएल 5:6–10), इसलिए यरूशलेम में गोलियत के सिर को लाने की बात सज़्भवत: इस बात का पूर्वानुमान है कि कई साल बाद ज़्या हुआ था।

[31]ज़्योंकि वह तलवार मन्दिर में रख दी गई थी (1 शमूएल 21:8, 9) इसलिए कई लोगों का अनुमान है कि ''उसके डेरे'' का संकेत दाऊद के अपने तज़्बू के बजाय मन्दिर की ओर है। हो सकता है कि दाऊद पहले वे हथियार घर ले गया हो, और फिर बाद में उसके मन में उन्हें मन्दिर को दान करने का विचार आया ताकि सारा इस्राएल उससे उत्साहित हो। ध्यान दें कि ''डेरा'' शज़्द का अर्थ कई बार ''घर'' के लिए किया जाता है (1 शमूएल 13:2; आदि)।